ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को 71वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 43, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जनवरी, 2020 से रविवार 26 जनवरी, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारतीय राष्ट्रीय पर्व गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) की शुभकामनाएं

भारत के लिए गणतंत्र दिवस केवल एक पर्व नहीं, बल्कि गौरव और सम्मान है। यह दिवस हर भारतीय का अभिमान है, अनगिनत लोगों की कुर्बानी के बाद भारत मां को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली थी, लेकिन उसे स्वतंत्रता का आकार 26 जनवरी 1950 को मिला, इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। भारत का संविधान दुनिया में सबसे बड़ा लिखित संविधान है और भारत दुनिया में बड़ा गणतंत्र देश है। 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ था लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि स्वतंत्रता के लिए हमारे वीर सपूतों ने अनेक बलिदान दिए हैं। आज हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों के इस बलिदान को व्यर्थ न जाने दें। हम सभी को अपने देश की एकता अखण्डता के लिए हमेशा सजग रहना चाहिए। साथ ही साथ जो हमारे देश मे वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है, उसे बरकरार रखना चाहिए। **आप सभी को गणतंत्र दिवस के पवन पर्व पर आर्य समाज की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।**

124वें जन्मदिवस (23 जनवरी) पर विशेष

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती पर शत-शत नमन

किसी बच्चे के सामने जब यह नारा बोला जाता है कि '**तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा**' तो बच्चे के मुंह से एक ही शब्द निकलेगा नेता जी सुभाष चंद्र बोस। क्योंकि इस नारे से देश को नई ऊर्जा देने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीयता की पहचान हैं। वह ऐसे वीर सैनिक हैं, जिनके द्वारा दिए गया '**जय हिन्द**' का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया और सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमांडर के रूप में जब सेना को संबोधित करते हुए उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया तो राष्ट्र को स्वतंत्र कराने को आजाद हिन्द फौज के सिपाही अपना तन-मन-धन देने को तैयार हो गये।

23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक में पैदा हुए, स्वतंत्रता के इस महान नेता ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईसीएस)

- शेष पृष्ठ 6 पर

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के छात्रों को महाशय जी ने दिया आशीर्वाद

यज्ञ की अग्नि की तरह प्रदीप्त होकर मानव समाज को करो प्रकाशित - पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

19 जनवरी 2020 आर्य समाज डी-ब्लॉक विकासपुरी। यह सर्व विदित है कि आर्य समाज द्वारा महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से देश के प्रतिभावान सुयोग्य बच्चों को उच्च शिक्षा, आवास, भोजन आदि की समस्त सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान की जा रही हैं। भारत के होनहार,कर्णधार इन बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए संस्थान हर तरह की मदद कर रहा है, जिससे समाज सेवा के लिए ईमानदार, कर्मठ और समर्पित ऑफिसरों का निर्माण संभव हो सके। ये सुयोग्य बच्चे आई.ए.एस. तथा आई.पी.एस ऑफिसर बनकर मानव समाज को सुदिशा प्रदान कर सकें और राष्ट्र के नव निर्माण में सहयोगी बन सकें। इसी भावना और कामना को मन में रखते हुए 19 जनवरी 2020 को संस्थान के सभी बच्चों एवं अधिकारियों के साथ महाशय धर्मपाल जी ने आर्य समाज डी-ब्लॉक विकासपुरी में स्वयं यज्ञ किया और बच्चों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सर्वश्री विनय आर्य जी, सत्यानन्द आर्य जी, वीरेन्द्र सरदाना, योगेश आर्य जी, हरीश कालरा जी, ओमप्रकाश घई जी, कर्नल रमेश मदान जी, अनिल भाटिया जी, जितेन्द्र गुप्ता जी, डॉ. उमाशशि दुर्गा, श्रीमती ज्योति ओबरॉय, गौरव पाण्डेय जी, श्रीमती अनु वासुदेवा जी सहित सभी आर्य प्रतिभा संस्थान के होनहार बच्चे उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सूर्यदेव जी थे। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए अपने आशीर्वाद में कहा कि यज्ञ की अग्नि की तरह आप भी मानव समाज को प्रकाशित करो तथा ऊंचे उठो, आगे बढ़ो आप सभी का भविष्य उज्ज्वल हो। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है। पूरी ईमानदारी से मेहनत करो, आपका पुरुषार्थ अवश्य सफल होगा। सभी बच्चों ने यज्ञ में आहुति दी और महाशय जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री विनय आर्य जी ने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए अपने संदेश में कहा कि यह समय सृजन का है। अपने जीवन को उन्नति, प्रगति और सफलता की राह पर आगे बढ़ाने के लिए नियमित , व्यवस्थित और मर्यादित होकर चलिए, समय तुम्हें पुकार रहा है, समय की आवाज सुनो और शिखर पर आरूढ़ हो जाओ, आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आर्य समाज डी ब्लॉक के प्रधान श्री हरीश कालरा जी ने भी बच्चों को शुभकामनाएं दी। सभी उपस्थित आर्यजनों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

कलम के निर्भीक योद्धा-पंजाब केसरी के सम्पादक श्री अश्विनी चोपड़ा का निधन

आर्यसमाज की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि

सुप्रसिद्ध वरिष्ठ पत्रकार, पूर्व लोकसभा सांसद, ख्याति प्राप्त समाचार पत्र पंजाब केसरी के स्वामी एवं संपादक श्री अश्विनी कुमार चोपड़ा जी का दिनांक 18 जनवरी, 2020 को 63 वर्ष आयु में निधन हो गया। श्री चोपड़ा जी एक महान आर्य समाजी परिवार के वैदिक विचारों की धरोहर के संपोषक थे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सच्चे भक्त, और सत्य पर आधारित लेखनी के धनी योद्धा थे। आपका प्रेरक स्वरूप और निष्ठावान व्यक्तित्व मानवमात्र के लिए प्रेरणाप्रद है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा एवं आर्यसन्देश परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि महान दिवंगत पुण्यात्मा को शान्ति-सदगति प्रदान करे और चोपड़ा परिवार को इस असहनीय पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे।

वेद-स्वाध्याय

देव मन द्वारा ज्ञान की स्थिरता

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।। - अथर्व0 1/1/2
ऋषिः- **अथर्वा।।** देवता-**वाचस्पतिः।।** छन्दः-**अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **वाचःपते** = हे वाणी व ज्ञान के पालक देव! तुम **पुनः** = फिर **एहि** = मुझमें आओ; **देवेन** = देव, द्योतमान **मनसा** = मन के, मननक्रिया के **सह** =साथ आओ। **वसोःपते** = हे वसु के पति ! तुम **नि रमय** = मुझे [इस ज्ञान में] रमण कराओ, रस दिलाओ, आनन्दित कराओ; **मयि श्रुतम्** = मेरा सुना हुआ ज्ञान **मयि एव** = मुझमें ही **अस्तु** = रहे, ठहरे।

विनय-मैं जो कुछ सुनता हूँ वह मुझमें ठहरता नहीं। मानो मैं 'एक कान से सुनता हूँ और दूसरे से निकाल देता हूँ।' इस तरह मेरा मनोमय शरीर ऐसा रोगग्रस्त हुआ पड़ा है कि मैं अच्छे-से-अच्छे सत्य उपदेश सुनकर और उत्तम-उत्तम वेदज्ञान पाकर भी उसे अपने में धारण नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि मेरे इस शरीर ने अपनी मनन-क्रिया को छोड़ दिया है। मनन करना, आत्मचिन्तन करना, एकान्त में आत्मनिरीक्षण व विचार करना त्याग दिया है। ऐसा करना मेरे स्वभाव में ही नहीं रहा है, अतः मेरा मन 'देव' नहीं रहा है, द्योतमान, प्रज्वलित और जीवनसम्पन्न नहीं रहा है और मेरा मनोमय शरीर मृतप्राय हो गया है, अतः हे वाचस्पते ! हे वाणी व ज्ञान के पालक देव ! हे मेरे मनोमय देह के प्राण ! तुम फिर मुझमें आओ और अपने प्रवेश द्वारा मेरे इस मृत मन-शरीर को पुनरुज्जीवित कर दो। तुम देव-मन के साथ फिर मुझमें प्रविष्ट होओ और मुझमें मनन, चिन्तन और आत्मभावन व आत्म निरीक्षण का अभ्यास फिर से जारी कर दो। अभी तक बेशक बिना भूख के खाये स्वादु-से-स्वादु भोजन की तरह मेरा सुना हुआ सुन्दर-से-सुन्दर वेद-ज्ञान मुझे नीरस और अरुचिकर लगता रहा है, परन्तु अब से तो मुझमें देव-मन के जगा देने द्वारा, हे वसोष्पते ! तुम इस वेदज्ञान में मुझे नितरां रत कराओ, रमण कराओ। हे बसनेवाली स्थिर वस्तु के पति ! हे इस ज्ञान-ऐश्वर्य के रक्षक ! तुम ऐसा करो कि शुष्क-से-शुष्क किन्तु सत्य और हित के उपदेश मुझे अब बड़े आनन्ददायी और सरस लगने लगें और अतएव मुझमें रक्षित और स्थिर रहने लगें। तुम मुझमें मनन-क्रिया को ऐसा जगा दो कि मेरा मन अब द्योतमान हो जाए; इसमें मानसिक अग्नि जल उठे, ज्ञान की भूख लगने लगे, जिज्ञासाएँ उत्पन्न होने लगें। तब तो भूख में खाये रूखे-सूखे भोजन की भाँति भी शुष्क-से-शुष्क दीखनेवाले उच्च ज्ञान में भी मेरा मन निःसन्देह रमने लगेगा और बड़ा आनन्दरस पाने लगेगा। तब तो मैं जो कुछ सुनूँगा वह अवश्य मुझमें ठहरेगा, हजम होकर मेरे मनोमय शरीर का अंग हो जाया करेगा और इस प्रकार मैं प्रतिदिन नया-नया ज्ञान ग्रहण करता हुआ मानसिक रूप में समुन्नत, वृद्धिंगत और विकसित होता जाऊँगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय **विरोध प्रदर्शन का असली दर्शन**

शाहीन बाग : कितना विरोध - कितना षड़यन्त्र

.....दिल्ली के शाहीन बाग में चल रहे प्रदर्शन का हाल कुछ ऐसा ही है, जहां हो रहे प्रदर्शन की वजह से हर दिन लाखों लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नोएडा और दिल्ली को जोड़ने वाले इस धरने के कारण लाखों लोगों को हर दिन दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। जिस दूरी को लोग आधे घंटे में तय करते थे अब उसी के लिए लोगों को तीन से चार घंटे का समय देना पड़ रहा है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर विपक्ष लगातार भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहा है। विपक्षी नेता अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने में लगे हुए हैं और इस पूरे प्रकरण में सबसे ज्यादा नुकसान आम जनता को उठाना पड़ रहा है।.....

फारसी भाषा में शाहीन उस चिड़ियाँ का नाम है जो अपने शिकार को उड़ते हुए खाती है। आजकल दिल्ली का शाहीन बाग एक जंग का अखाडा बना हुआ है। दिल्ली के शाहीन बाग में चल रहे प्रदर्शन का हाल कुछ ऐसा ही है, जहां हो रहे प्रदर्शन की वजह से हर दिन लाखों लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नोएडा और दिल्ली को जोड़ने वाले इस धरने के कारण लाखों लोगों को हर दिन दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। जिस दूरी को लोग आधे घंटे में तय करते थे अब उसी के लिए लोगों को तीन से चार घंटे का समय देना पड़ रहा है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर विपक्ष लगातार भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहा है। विपक्षी नेता अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने में लगे हुए हैं और इस पूरे प्रकरण में सबसे ज्यादा नुकसान आम जनता को उठाना पड़ रहा है।

बीच सड़क प्रदर्शन में तम्बू से लेकर एक बड़ा मंच है। जहाँ से धरने पर बैठे लोगों को बार-बार सड़क पर डटे रहने की सलाह दी जा रही है। बताया जा रहा है प्रदर्शन में खाने पीने का भरपूर सामान है जिसे देखकर धरना कम पिकनिक का अड्डा ज्यादा नजर आता है। एक तरफ कहा जाता है भारत का मुसलमान गरीब है, दूसरी ओर शाहीन बाग में प्रदर्शन स्थल के बाहर जितनी भी दुकानें हैं उनसे किराया नहीं लिया जा रहा है। जबकि उन दुकानों का किराया एक से डेढ़ लाख रुपए के बीच है। यह देखकर साफ हो जाता कि यह कोई प्रदर्शन नहीं बल्कि प्रदर्शन की आड़ में चल रहा एक कारोबार है। प्रदर्शन में गले ना उतरने वाली सबसे बड़ी बात तो यह है कि धरना करने वाले लोग खुद को संविधान का प्रेमी और लोकतंत्र का रक्षक बता रहे हैं। लेकिन क्या बीच सड़क पर धरना देकर आम लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देने से क्या संविधान की रक्षा हो जाती है?

आजादी के तराने गूंज रहे हैं इन्कलाब जिन्दाबाद, भारत किसी के बाप का नहीं, हमें चाहिए आजादी आदि नारे सुनकर एक बारगी तो लगता है जैसे मंच पर बस महात्मा गाँधी और जिन्ना के आने भर की देरी हो। प्रदर्शन में शामिल एक महिला मीडिया को बता रही है कि बहुत हो गया कभी अखलाक तो कभी जुनेद, फिर धारा 370 और राम मंदिर अब सहन नहीं होगा। भला इस धरने में धारा 370 का क्या लेना, राम मंदिर इसमें कहाँ से आ गया?

नागरिकता कानून तो बहाना लगता है वरना फिलिस्तीन का हिसाब बंगाल में माँगा जा रहा है, कश्मीर का हिसाब जे.एन.यू. में माँगा जा रहा है, अखलाक, राम मंदिर और धारा 370 का गुस्सा दिल्ली के शाहीन बाग में दिखाया जा रहा है। जे.एन.यू. में छात्रों का आपसी विवाद होता है तो मुम्बई में इसका विरोध करने वालों के हाथों में फ्री कश्मीर का पोस्टर होता है। देखकर लगता है कि सब बड़ा प्रीप्लान किया जा रहा है। इस सबके पीछे बैठे वामपंथी बौद्धिक समूह और मीडिया के लोग इस खेल को बड़ी सावधानी से खेल रहे है, रामचन्द्र गुहा जैसे कांग्रेसी इतिहासकार धरने पर आकर मजबूती प्रदान कर रहे है।

नागरिकता कानून के विरोध में पहली बार राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का बेहताशा प्रयोग किया जा रहा है। चाहें विरोध लखनऊ में हो या दिल्ली के शाहीन बाग से लेकर सीलमपुर तक हर जगह एक नई सोची समझी देशभक्ति देखने को मिलेगी। इसके अलावा पुलिस पर पथराव होता है तो पथराव में शामिल लोगों को मासूम प्रदर्शनकारी बताया जाता है। अगर कोई प्रदर्शनकारी चोटिल हो जाता है तो कई चैनल है जो बताते कि अब्दुल अपनी दिहाड़ी मजदूरी करके वापिस लौट रहा था, पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कय्यूम घर से यह कहकर निकला था कि अम्मी मैं पारले का बिस्किट लेने जा रहा हूँ लेकिन वह पुलिस की कार्रवाई में घायल हो गया। ऐसी न जाने कितनी कहानियाँ हर रोज प्रकाशित हो रही है। एक ऐसा माहौल तैयार हो रहा है जिसे देखकर लगता है कि सरकार वाकई जुल्म कर रही है।

मतलब नागरिकता कानून के नाम पर शाहीन बाग में चल रहे प्रदर्शन को लेकर ये लोग कोई अवसर नहीं जाने दे रहे हैं। कई दिन पहले कांग्रेसी नेता मणिशंकर अय्यर पाकिस्तान गये वहां से लौटकर इसी धरने में पहुंचकर संवेधानिक पद पर बैठे प्रधानमंत्री मोदी को कातिल बताया। पूरे विपक्ष की ओर से इस ओछी राजनीति के मुजरे पर वाह वाह होना अपने आप में सब कुछ कह जाता है। स्वार्थ की चासनी में लिपटी गंदी राजनीति इसके बावजूद हो रही है कि जब किसी भारतीय नागरिक से नागरिकता संशोधन कानून का कुछ लेना-देना तक नहीं है।

लगता है कुछ भी अपने आप नहीं हो रहा है सब कुछ कराया जा रहा है, जैसे वामपंथी और मुस्लिम संगठन एक होकर लोकतंत्र को गटकने की फिराक में हो? नागरिक कानून के नाम पर पहले देश भर में हिंसा आगजनी का माहौल तैयार किया गया। जब वह असफल होता दिखा तो दिल्ली के शाहीन बाग में चल रहा धरना प्रदर्शन इसी गेम का हिस्सा है, अगर यह जरा भी सफल रहा तो ऐसे प्रदर्शन देश भर में देखने को मिल सकते है। हाल ही मैं वीडियो आपने देखी होगी कि शाहीन बाग प्रदर्शन स्थल पर महिलाएं शिफ्ट में आती हैं और उन्हें 500 से 700 रुपए दिए जाने की बात हो रही हैं। वहीं, प्रदर्शन स्थल के बाहर जितनी भी दुकाने हैं उनसे किराया नहीं लिया जा रहा है जबकि उन दुकानों का किराया एक से डेढ़ लाख रुपए के बीच है। स्वयं सोचिए इतनी बड़ी रकम कौन खर्च कर रहा है? - ***सम्पादक***

ईसाइयत के प्रचार के पीछे की खतरनाक योजना का पर्दाफास

भारत में लम्बे होते जीसस के हाथ

.....भारत में धर्म परिवर्तन कराने वाली ईसाई मिशनरी ऐसे ही योजनाबद्ध तरीके से सनातन धर्म और भारत की जड़ों को काटने का कार्य सदियों से करती आ रही हैं। जिनको समय-समय पर और परिस्थिति के अनुसार राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता रहा है। गन्दी दमनकारी राजनीति और स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने अपने ही राष्ट्र और समाज को बेचने और सांस्कृतिक जड़ों को काटने का काम किया है। धर्म परिवर्तन का ये खेल अब खुलकर सामने आ रहा है। उत्तर भारत में चंगाई सभाओं से लेकर पश्चिम बंगाल, असम, केरल, या फिर तमिलनाडु सहित पूरे दक्षिण भारत में ही नही बल्कि सम्पूर्ण भारत में बड़ी-बड़ी और ईसाई मिशनरियों द्वारा तेजी के साथ अलग अलग रास्तों से अलग अलग तरीकों से धर्मान्तरण का खेल खेला जा रहा है।...

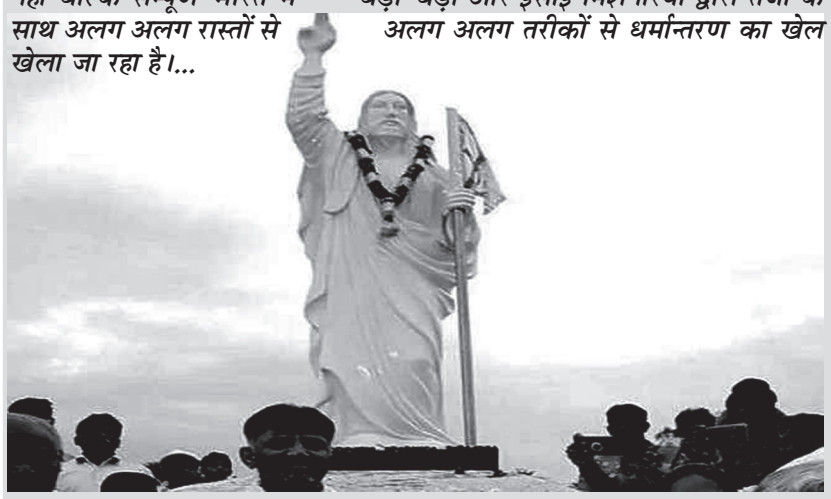

क्या कोई कल्पना कर सकता है कि यूरोप के किसी देश में श्रीराम चन्द्र जी की कोई भव्य और विशालकाय प्रतिमा स्थापित हो सकती है। या वेटिकन सिटी में श्री कृष्ण का कोई भव्य मंदिर या प्रतिमा का अनावरण हो सकता है? शायद ये बेतुकी कल्पना कही जाएगी क्योंकि ईसाई बाहुल देश और वहां के चर्च इसे कभी भी किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं करेंगे। लेकिन इसके विपरीत दक्षिण भारत के राज्य कर्नाटक में जीसस क्राइस्ट की 114 फुट ऊंची प्रतिमा लगाई जा रही है। कर्नाटक कॉन्ग्रेस के वरिष्ठ नेता और विधायक डी.के. शिवकुमार इस प्रतिमा को लगाने के लिए जी जान से जुटे हैं। बताया जा रहा है 114 फिट ऊँची प्रतिमा को करीब 800 करोड़ की लागत से बनाया जा रहा है।

देखा जाये तो कर्नाटक में जीसस की इस 114 फुट ऊंची प्रतिमा लगाना कोई भक्ति भाव नहीं है। बल्कि एक धार्मिक षड्यन्त्र का हिस्सा नजर आ रहा है, या ये कहें कि इस प्रतिमा के जरिये दक्षिण भारत को ईसाइयत में लपेटने की तैयारी का ये बड़ा हिस्सा है। यानि भारतीय धराधाम से जुड़े महापुरुषों को छोटा करो और जीसस को बड़ा। असल में किसी धर्म या समाज को कमजोर करना है तो सबसे पहले उससे जुड़े महापुरुषों का मजाक बनाया जाता है और लोगों का स्वाभिमान तोड़ा जाता है। यह ऐसा धीमा विष दिया जाता है जिसमें उस समाज से जुड़े लोग अपने ही देश, अपने ही पूर्वज, संस्कृति, भाषा, आस्था, पूजा पद्धति, देवता व आचार विचार एवं स्वयं की जीवन शैली का मजाक बनाने लगते हैं और अपने ही महापुरुषों का मजाक बनाने में उनको अथाह संतुष्टि मिलने लगती है।

भारत में धर्म परिवर्तन कराने वाली ईसाई मिशनरी ऐसे ही योजनाबद्ध तरीके से सनातन धर्म और भारत की जड़ों को काटने का कार्य सदियों से करती आ रही हैं जिनको समय-समय पर और परिस्थिति के अनुसार राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता रहा है। गन्दी दमनकारी राजनीति और स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने अपने ही राष्ट्र और समाज को बेचने और सांस्कृतिक जड़ों को काटने का काम किया है। धर्म परिवर्तन का यह खेल अब खुलकर सामने आ रहा है। उत्तर भारत में चंगाई सभाओं से लेकर पश्चिम बंगाल, असम, केरल, या फिर तमिलनाडु सहित पूरे दक्षिण भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत में बड़ी-बड़ी और ईसाई मिशनरियों द्वारा तेजी के साथ अलग अलग रास्तों से अलग अलग तरीकों से धर्मान्तरण का खेल खेला जा रहा है।

भले ही किसी देश के पास जल, थल और वायु तीन तरह की सेनाएं हों। लेकिन यूरोपीय देशों के पास थल सेना, जल सेना, वायु सेना और चर्च की सेना है। एक वैचारिक हथियार लिए बिशप आर्च बिशप, नन, पादरियों की यह सेना भेजी जाती है जो स्थानीय लोगों के लिए शिक्षा एवं सेवा के नाम पर जीत का माहौल तैयार करती है और धीरे-धीरे वह समस्त प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा कर लेते हैं। चर्च और षड्यन्त्रकारियों का मक्कड़जाल इतनी धूर्तता से अपना काम स्थानीय बौद्धिक वर्ग में करता है कि वहाँ की संस्कृति कब नष्ट हो गयी पता ही नही चलता।

आप स्वयं समझिये 800 करोड़ की लागत से बनने वाली यीशु की यह विशालकाय प्रतिमा के लिए धन कहाँ से आ रहा है? कर्नाटक के धर्मान्तरित स्थानीय इसाई तो इतना धनाड्य नहीं है फिर इस प्रतिमा के लिए धन का स्रोत क्या है? असल में ईसाइयत का खेल खेलने के लिए विदेशों से हजारों करोड़ रुपया थोक के भाव भारत भेजा जाता है सिर्फ इतना ही नहीं, इसके लिए भारत मे ही बैठे हिंदुत्व विरोधी और राष्ट्र के दुश्मनों को धन उपलब्ध कराते हैं। धर्मान्तरण के लिए सबसे पहले निशाना बनाया जाता है गरीब, दलित और आदिवासियों को जिनकी गरीबी और अशिक्षा को हथियार बना कर, धन का लालच देकर, बहला फुसलाकर कर हाथों में बाइबल और क्रॉस थमा दिया जाता है और उनको अपनी ही संस्कृति व धर्म का दुश्मन बना दिया जाता है। आप कह सकते हैं कि धीरे धीरे उनको मानसिक गुलाम बना दिया जाता है। इन सबके लिए ये ईसाई मिशनरी तरह तरह की पुस्तकों, प्रचार माध्यमों, फिल्मी कार्यक्रमों व चर्च में होने वाली नियमित बैठको के साथ साथ स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों का सहारा लेते हैं और नितांत योजनाबद्ध तरीके से लोगों के दिमाग में उनके ही गौरव पूर्ण इतिहास, देवी देवताओं तीर्थों और महापुरुषों के प्रति विष भरने के लिये प्रशिक्षण सत्र चलाये जाते हैं और वे इस कार्य मे सफल भी हैं।

एक समय से जातिवाद भारत की कमजोरी रहा है और षड्यंत्रकारी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर दलित कार्ड खेलकर उनको हिन्दुओं से अलग धर्म वाला बताने में लगे हैं। पिछड़े एवं नासमझ तथाकथित दलितों का दिमाग परिवर्तन करके उनको नास्तिक बनाया जाता है। फिर कैसे भी लालच देकर ईसाई बना लिया जाता है।

प्रत्येक राष्ट्र का एक धर्म और आत्मा होती है और भारत का धर्म वैदिक और आत्मा सनातनी है जिनको नष्ट करने के प्रयास किये जा रहे हैं। विदेशों में बैठे धर्म के व्यापारी खुलकर व्यापार कर रहे हैं और भारत को धर्म परिवर्तन की मंडी बनाया हुआ है। जगह जगह धर्म परिवर्तन की दुकानें चल रही हैं जिसमें हमारी चुप्पी, लचर कानून व्यवस्था और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण हम उनका शिकार बनते जा रहे हैं। स्थिति काफी हद तक बिगड़ चुकी है, धर्म परिवर्तन के ठेकेदार इतने कमजोर नहीं रहे कि हम तुरंत राष्ट्र को खंडित करने वाले इस षड़यंत्र को रोक पाएंगे। इसके लिए लड़ाई लड़नी पड़ेगी। सोई हुई सरकारों को आगाह करना पड़ेगा। अपनी कमियों का भी आकलन करना पड़ेगा। छुआ छूत ऊंच नीच और अंधविश्वास पूर्णतया समाप्त करके नई पीढ़ी में समानता और एकता की भावना जगानी होगी। आने वाली पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय और गुलाम न बने इसके लिए स्वयं को जगाने की आवश्यकता है। वरना ऐसी प्रतिमाये खड़ी होती चली जाएंगी और लोगों की आस्था इस भारतीय धराधाम के प्रति न होकर वेटिकन के प्रति हो जाएगी।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

आज ब्रह्म को नहीं छोडूंगा

अजमेर में आर्यसमाज का एक उत्सव रक्खा गया। उस अवसर पर नवीनवेदान्तियों से एक शास्त्रार्थ रक्खा गया। एक मायावादी साधु नवीनवेदान्त का पक्ष रखते हुए बार-बार इसी बात पर बल दे रहे थे कि 'जगत् मिथ्या है, जगत् मिथ्या है'। 'जीव ही ब्रह्म है', 'मैं ब्रह्म हूँ', वे ऐसी रट लगाते रहे। वेदी पर कई विद्वान् विराजमान थे। स्वामी लक्ष्मणानन्दजी भी वेदी पर बैठे थे।

वे उठे और उठकरर उस नवीन वेदान्ती बाबा को कसकर अपनी बाँहों में ले-लिया। श्रोता व उपस्थित विद्वान् यह देखकर चकित रह गये कि यह क्या हो गया। इतना बड़ा महात्मा और पूज्य विद्वान् क्या कर रहा है? वह मायावादी बात भी चिल्लाने लगा कि मुझे छोड़ो, यह क्या कर रहे हो।

स्वामी लक्ष्मणानन्दजी ने अपनी विशिष्ट शैली में कहा, ''मैं आपको अब नहीं छोडूँगा। मैंने घरबार छोड़ा, काषाय वस्त्र धारण कर संन्यासी बना। वर्षो से ब्रह्म-प्राप्ति के लिए साधना में लगा हूँ। आज मुझे बड़े भाग्य से ब्रह्म की प्राप्ति हुई है। अब मैं ब्रह्म के को नहीं छोडूँगा। मेरे जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया। ब्रह्म के दर्शन हो गये। अब मैं ब्रह्म को नहीं छोड़ सकता। अब ब्रह्म जाएगा कहाँ?

स्वामी लक्ष्मणानन्दजी की पकड़ में आकर मायावादी साधु की आँखें खुल गईं। उसका भ्रम-भंजन हुआ और श्रोताओं को भी भली-प्रकार से समझ में आ गया कि शांकर मत कितना थोथा है। वैदिक दृष्टिकोण लोगों को बड़ी सहज रीति से हृदयंगम हो गया।

यह घटना हमें कैप्टन देवरत्नजी ने सुनाई। वे उस सभा में उपस्थित थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

मध्य प्रदेश के महू में गायत्री महायज्ञ एवं भव्य शोभायात्रा सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने किया शोभायात्रा का नेतृत्व

वर्ष 2001 से निरन्तर प्रति दो वर्ष में होने वाले 7 दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस बार दिनांक 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक पुन: यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें आर्य समाज से संबंधित आर्य जनों के अतिरिक्त अन्य सनातनधर्मी पौराणिक जनों की उपस्थिति बड़ी संख्या में थी। इसका लाभ भी होता है यज्ञ के सही स्वरूप को देखने, सुनने का प्रभाव भी होता है, वहीं अन्य कार्यक्रमों से प्रभावित अनेक नये व्यक्ति वैदिक विचारधारा से परिचित हुए और आर्य समाज के साथ जुड़ गए।

कार्यक्रम स्थल पर भव्य यज्ञशाला जिसमें 11 यज्ञवेदी बनी थी जिसमें प्राचीन छटा दिखाई दी, बहुत ही आकर्षक सुसज्जित, भूमि से 5 फुट उँची 50 बाय 50 फुट में सैकड़ों बाँस बल्ली से निर्मित थी। मुख्य पण्डाल जहाँ से प्रवचन, भजन, वेदकथा, व्याख्यानमला और लघुनाटिका, प्रदर्शन आदि आयोजित किए गए, वह अत्यन्त भव्य आकर्षक और विशाल बना था जिसमें 5000 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था थी।

महापुरुषों के चित्रों से वैदिक सिद्धान्तों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी बनाई गई जिसे देखने वाले तथा उसका फोटो निकालते देखे जाते हैं।

आर्ष साहित्य सामग्री व औषधि आदि के विक्रय हेतु 15 दुकानों का निर्माण किया गया था।

कार्यक्रम में प्रथम दिवस एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। महू नगर की दृष्टि से यह अभूतपूर्व शोभायात्रा थी, जिसकी लम्बाई लगभग 1 किलोमीटर थी। शोभायात्रा पर बैण्ड गायत्री मन्त्र की धुन बजाते हुए आगे चल रहा था। उसके पश्चात् वैदिक छात्रावास व आर्य शिक्षण संस्थान के विद्यार्थी, फिर श्री एकेडमी विद्यालय, कोदरिया का बैण्ड, इसके पश्चात् एक वाहन पर भजनों की प्रस्तुति करती हुई भजन मण्डली, इसके पश्चात् महापुरुषों की वेशभूषा से सज्जित विद्यार्थी और चारों वेदों के मन्त्रों से सुसज्जित घूमता हुआ पोस्टर। इसके पश्चात एक रथ पर पाणिनी महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियाँ और डॉ. प्रीति विमर्शिनी जी थे, जो यज्ञ कर रहीं थी।

इसके पश्चात आर्य वीर दल कानड़ आगर के सैकड़ों आर्यवीर व्यायाम का, शस्त्र चालन का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे। विशेष आकर्षण का दृश्य था रस्सी मलखम जिसके लिए क्रेन का उपयोग हुआ, जिससे 30 फुट उँची रस्सी बांधी गई थी। यह हजारों व्यक्तियों के लिए नया दृश्य था।

शोभायात्रा में एक बग्घी पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, दूसरी बग्घी पर न्यायमूर्ति वीरेन्द्र दत्त ज्ञानी और आचार्य योगेन्द्र शास्त्री बैठे थे। इसके पीछे सैकड़ों की संख्या में स्त्री, पुरुष पैदल चल रहे थे। पीछे-पीछे चार पहिया वाहन चल रहे थे।

शोभायात्रा का नगर में 50 से अधिक स्थानों पर पुष्प वर्षा एवं मालाओं से स्वागत हुआ। हजारों की संख्या वाली यह शोभायात्रा एक ऐतिहासिक बन गई थी।

भोजनशाला - 3 से 4 हजार व्यक्तियों ने प्रतिदिन प्रसाद ग्रहण किया।

प्रतिदिन के कार्यक्रम - आसन-प्राणायाम-योग शिविर प्रात: 6.30 से 7.30 तक, यज्ञ-भजन-प्रवचन प्रात: 8 से 12 बजे तक, वेदकथा दोपहर 2 से 4.30 तक, व्याख्यान माला सायंकाल 7.30 से 9.30 तक नारी जागृति सम्मेलन एवं भजन सन्ध्या।

आमन्त्रित विद्वान थे - श्री सुरेश चन्द्र आर्य (प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), डॉ. वेदपालजी (प्रधान-परोपकारिणी सभा अजमेर), डॉ. योगेन्द्र जी शास्त्री (होशंगाबाद), स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद, सीकर राजस्थान), स्वामी सम्पूर्णानन्द जी (हरियाणा), आचार्य वागीश शर्मा (एटा उ.प्र.), डॉ. प्रीति विमर्शिणी एवं गुरूकुल पाणिनी

- शेष पृष्ठ 8 पर

ध्वजारोहरण करके गायत्री महायज्ञ का शुभारम्भ करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी। इस अवसर पर आयोजित भव्य शोभायात्रा का नेतृत्व करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं सम्मिलित विभिन्न स्थानों से पधारे आर्यजन।

गायत्री महायज्ञ के अवसर पर भजन प्रस्तुत करती गुरूकुल की छात्राएं एवं उपस्थित आर्यजनों से भरा पण्डाल

बलिदान दिवस
बसन्त पंचमी पर विशेष

धर्म वीर शहीद बालक हकीकत राय

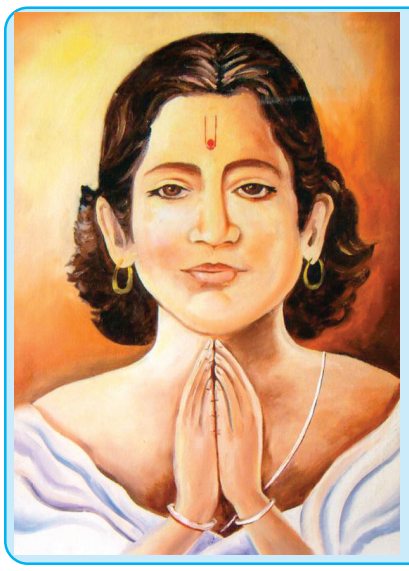

.....लाहौर के नवाब का कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकत राय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाए। अचानक उसने हकीकत राय से कहा- बेटा, हकीकत राय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूं। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा, तेरी जान बच जाएगी। मैं अपनी सूबसूरत बेटी नूरां का तेरे साथ निकाह कर दूंगा। मेरी सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जाएगा।....

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला-''बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति की मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।''.....

आर्यावर्त्त (भारतवर्ष) वीर शहीदों, धर्मात्माओं, ऋषियों, मुनियों की पुण्य-भूमि है। समय-समय पर भारत के वीर शहीदों ने देश, धर्म, जाति की रक्षा में हंसते हुए अपना जीवन भेंट चढ़ाया है। उन्हीं वीर शहीदों की प्रथम पंक्ति में धर्म शहीद बाल हकीकत राय का नाम आता है। जिसने पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में धर्म रक्षा में अपने प्राण न्योछावर कर संसार को चकित कर दिया था। आइए, उसी वीर बालक के महान त्याग एवं बलिदान की गाथा पढ़ें।

पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) के स्याल कोट नामक नगर में महाजन भागमल एवं उसकी पत्नी कौरा देवी रहते थे। सन् 1719 ईस्वी में उनके घर एक पुत्र रत्न जन्मा। उसका नाम हकीकत राय रखा गया। परिवार धन-धान्य से भरपूर था, फलतः हकीकत राय का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। वह कुशाग्र बुद्धि था, सब उसे घर में प्यार करते थे। महाजन भागमल तथा श्रीमती कौरा देवी उसे रामायण, महाभारत की कथाएं सुनाया करते थे। उनकी धर्म परायणता का बालक हकीकत राय पर भारी प्रभाव पड़ा।

आठ वर्ष की आयु में बालक हकीकत राय ने पढ़ाई शुरू की। मेधा बुद्धि होने से वह एक बार में समझाने से ही पाठ याद कर लेता था। मौलवी (अध्यापक) उस पर बेहद प्यार करता था, इसलिए मुसलमान बालक उससे ईष्या-द्वेष करते थे।

एक दिन मौलवी साहब किसी कार्यवश पाठशाला से कुछ समय के लिए बाहर चले गए तथा जाते समय हकीकत राय को उन्होंने कक्षा सम्भालने का आदेश दिया। उनके चले जाने पर मुसलमान बच्चों को उसने शोर-शराबा करने से रोका तो उन्होंने उसकी भारी पिटाई की। मौलवी साहब के आने पर हकीकत राय ने सारी बात उन्हें बता दी। मौलवी साहब ने मुसलमान बच्चों की अच्छी तरह धुनाई की तथा हकीकत राय को पुचकारकर छाती से लगाया। इससे मुसलमान बालकों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातमा को गाली देने का आरोप लगाकर मौलवी की शिकायत अपने माता-पिता और नगर के काजी से कर दी। उन दिनों काजियों का बोल-बाला था। उन्होंने फतवा जारी कर दिया कि या तो हकीकत राय मुसलमान बने या उसका सिर काट लिया जाए। महाजन भागमल, कौरा देवी अन्य गणमान्य हिन्दुओं ने काजी से प्रार्थना की कि छोटे से बालक को क्षमा कर दिया जाए लेकिन उनकी प्रार्थना किसी ने भी नहीं सुनी तथा मुख्य काजी ने भागमल, कौरा देवी को लात मार-मारकर भगा दिया।

कुछ हिन्दुओं ने नगर के हाकिम अमीर बेग के पास जाकर सारी घटना सुनाई। नगर हाकिम एक शरीफ आदमी था। उसने काजियों को बुलाकर समझाया कि यह छोटे-छोटे बच्चों का झगड़ा है, उसे खत्म करने में ही सबकी भलाई है। उसके समझाने पर भी वे न माने और अमीर बेग पर भी रिश्वत लेने का आरोप लगा दिया। उसने भी विवश होकर मामला नवाब लाहौर को भेज दिया।

लाहौर के नवाब का कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकत राय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाए। अचानक उसने हकीकत राय से कहा- बेटा, हकीकत राय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूं। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा, तेरी जान बच जाएगी। मैं अपनी सूबसूरत बेटी नूरां का तेरे साथ निकाह कर दूंगा। मेरी सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जाएगा। हकीकत राय ने नवाब का यह फैसला सुनकर उत्तर दिया-

'नवाब साहब, बात आपकी,
मुझे न तनिक सुहाती है।
सच कहता हूं, अक्ल आपकी,
मुझको यह दर्शाती है।।
जो जग को रचने वाला है,
जो सर्व विश्व का है स्वामी।
तुम जगदीश्वर को भूल गए,
जो सच्चा न्यायकारी नामी।।
यदि मुसलमान बन जाऊं मैं,
क्या मौत मुझे 'ना' आएगी?
वह शक्ति कौन सी है जग में,
जो तुमको सदा बचाएगी?

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला-''बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति की मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।'' नवाब की यह बातें सुनकर वीर हकीकत राय ने गर्जते हुए कहा-

मरना है सबको एक रोज,
तो फिर क्यों धर्म डुबाऊं मैं?
गौ रक्षक से गौ भक्षक बन,
फिर पापी, क्यों कहलाऊं मैं?
मैं राम कृष्ण का वंशज हूं,
मैं वैदिक धर्म निभाऊंगा।
मेरी तो मौत सहेली है,
मैं उसको गले लगाऊंगा।।
है अमर आत्मा, याद रखो,
न मारे से मर सकती है।
ईश्वर कर्मों का फल देता,
न पेश किसी की चलती है।।
मैं जन्म दूसरा धारूंगा,
दोबारा जग में आऊंगा।
फिर तुम जैसे हत्यारों से,
निर्भय होकर टकराऊंगा।।

नवाब ने जब हकीकत राय की यह सिंह-गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल-पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलावाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी। भागमल, कौरा देवी और रिश्तेदार रो रहे थे। हकीकत राय की चौदह वर्ष की आयु में बटाला की लक्ष्मी देवी से शादी हो गई थी। वह बेचारी बटाला में बिलख रही थी। हिन्दू जनता भयभीत थी, यह था आपसी फूट का भयंकर परिणाम।

यह सन् 1734 ईस्वी की घटना है। सारे देश में बसन्त पंचमी का महापर्व मनाया जा रहा था और लाहौर में घोर अत्याचार हो रहा था। बालक हकीकत राय को वघ स्थल पर ले जाया गया। जल्लाद ने जब हकीकत राय को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया और तलवार हाथ से नीचे गिर गई। यह देखकर हकीकत राय बोला-

जल्लाद दया करके भाई,
अब बात मानले तू मेरी।
तू तो अब अपना फर्ज निभा,
क्यों करता है वृथा देरी।।
यदि मुझसे मोह करेगा अब,
तू नाहक मारा जाएगा।
तेरे भी बालक रोएंगे,
सारा कुनबा दुःख पाएगा।।
मत बाधा बन तेरे पथ में,
तू जल्दी कर, तू जल्दी कर।
मुझको तू धर्म निभाने दे,
मेरे हृदय की पीड़ा हर।।

जल्लाद ने हकीकत राय की बात मानकर तलवार हाथ में ली और दिल मजबूत कर वीर हकीकत राय की गर्दन पर तलवार का भरपूर वार किया। हकीकत राय का सिर कटकर एक ओर धरती पर गिर गया। कहते हैं वह उस समय हंस रहा था। धन्य था बालक हकीकत राय। वह धर्मरक्षा में अपना सिर कटवाकर भारत माता का सिर संसार में ऊंचा कर गया। जब तक सूरज, चांद सितारे, पृथ्वी पर रहेंगे, वीर हकीकत राय का नाम भी अमर रहेगा और भारत वीरों को धर्म रक्षा में बलिदान होने की प्रेरणा देता रहेगा।

सज्जनों! कुछ व्यक्ति कहते हैं कि उस समय मुगल बादशाह शाहजहां का शासन था तथा उसने नवाब और काजियों को मृत्यु दंड दिया था किन्तु यह विचार निराधार है क्योंकि हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ईस्वी में बसन्त पंचमी के दिन हुआ था और उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का शासन था। औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ईस्वी में हो चुकी थी तथा शाहजहां की मौत तो औरंगजेब की जेल में ही हो गई थी। वास्तव में यह मुसलमानों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की सोची समझी चाल है। हमें इससे सावधान रहना चाहिए। अन्त में प्रभु से प्रार्थना है -

हे जगत् पिता हे जगदीश्वर!
अब आर्यवर्त्त पर दया करो।
दो सुमति भारतीय वीरों को,
अज्ञान अविद्या नाथ हरो।।
जिससे यह देवों का भारत,
सिर मौर जगत का बन जाए।
भूखा-नंगा, अरु-दीन-दुखी,
भारत में नज़र नहीं आए।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय'
ग्राम बहीन, जिला-पलवल (हरि.)

समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थान उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) - 18 फरवरी, 2020 (मंगलवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **18 फरवरी** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। अतः आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। - **महामन्त्री**

Continue from last issue

Vidya And Moksha

Vidya-Avidya : *'Avidya'*, i.e. non-knowledgeable, is another name of 'indulgence in actions, particularly the bad ones. With the *help* of this type of knowledge, we can refrain from doing such actions and, thus, can leave aside the fear of death, or swim across it. *Vidya,* on the other hand, is the knowledge of reality and, thus, the means to gain salvation, through absolvement from indulgence in actions. The Philosophy of Yoga defines *Avidya* as: 'To treat and *indulge* in perishable, impure, sorrow-producing and *soul-less* things, though they are eternal, pure, pleasure- giving and having souls, is known *Avidya!* By sticking to the path of *Avidya,* one becomes devoid of true knowledge and, thus, leaves the path of righteousness. He cannot attain *Moksha* or Salvation.

Bandha and Moksha : *Bandha* and *Moksha,* i.e. Binding and Salvation, are not natural, as they are the results of some causes. As the Souls know little, according to their nature, they come into an embryo, take birth, accept the binding of results of their own actions, try to absolve themselves from them, as also try to reach the Supreme Reality, which is ever- joyous. Only after realising Him, the soul becomes absolved or Mukta.

To say, that *Jivatma* itself is *Brahma,* is a lie, because in that case that should also have the same attributes of 'formlessness', 'omnipresence'. etc. Instead, he has res- trictive features of *Antah karna,* Mind, etc. Therefore these two are different and separate entities. The Omni- present *Brahma* cannot become 'limited' or 'covered' as also He cannot have attributes of *A vidya* and Binding. These are the attributes of *Jivatma* which belong to a limited region, is devoid of knowldge, and is circumscribed.

***Mukti* or Salvation** means absolvement from the sorrows and griefs. This state can be attained, by abiding to the God's biddings ; by abstaining from *Avidya,* bad associations, habits, etc., by keeping to the righteous path; by making proper prayers, etc., to the God, as also by practising regularly in the Yogic exercises, engaging in studies, and labouring righteously. Without following this path, and by acting adversely, one gets into 'Bondage'.

During Salvation: After getting salvation, a *Jiva* remains within Brahma, and due to His omnipresence can wander within Him unhindered, always having Real Knowledge and feeling supreme joy. Even in this state, he has the attributes of Truth, Desire, Intent, etc. Whatever he desires, he can enjoy with his 'intent' and 'will' only. Such powers, as remain within *Jiva* without salvation, are thought to be twentyfour ; such as: Strength, Valiance, Attraction, Inspiration, Movement, etc. Even after leaving them aside; during salvation, he can still enjoy pleasures. Thus *Mukti* or Salvation does not mean to become Brahmah itself. instead it is to enjoy the pleasures while remaining within. the omnipresent and everjoyous God.

After Salvation : Souls enter body again, after Salvation. The period of salvation is equal to the period, during which this creation is created and destroyed or dissolved 3600 times, and is called as *'Mahakalpa'.* Even after knowing the truth that one has to return to the 'life' again one must try to attain salvation in the same way as one tries for a longer life" though he knows that ultimately he has to die.

Four such means of attaining salvation are as follows :.

(i) *Satsanga* : through which one knows from the knowledgeables about the Five stages of 'ascendence', i.e. *'Annamaya, Pranamaya,* etc, ; Three stages of A wakening, Sleeping and Slumber or *Sushupti ;* and four kinds of minute' body ;

(2) *Vairagya :* which means adopting the righteous path by knowing all the aforesaid things;

(3) *Sixfold Treasure:* Which is Calmness, restraint, etc ; and

(4) Abandoning of all desires other than *Mukti* or Salvation.

All this is done for attaining supreme pleasure and absolvement from the sorrows. For this one must follow a. four-fold path of Listening, Thinking, Concentrating and Realisation. Such an attempt he has to make during several 'lives'. 'Swarga' also means, the 'state of pleasure', which is attained only after absolving oneself from the bondage of birth, etc., in several attempts.

To be continued......

With thanks By: "Flash of Truth"

प्रथम पृष्ठ का शेष

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती ...

की परीक्षाओं में सफलता हासिल की थी, लेकिन पद छोड़ दिया और देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने का फैसला किया।

उसके बाद सुभाष चन्द्र बोस सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल हो गए, जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहा था वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक सक्रिय सदस्य भी बने और वर्ष 1938 और 1939 में, सुभाष चन्द्र बोस को पार्टी अध्यक्ष के रूप में चुना गया। हालांकि, सुभाष चन्द्र बोस ने वर्ष 1940 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया और उसके बाद बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की।

ब्रिटिश सरकार का विरोध करने पर वे नजरबंद कर लिए गये थे किन्तु सुभाष ने वर्ष 1941 में गुप्त तरीके से देश छोड़ दिया था और अफगानिस्तान के रास्ते से पश्चिम की ओर यूरोप चले गए, जहाँ पर सुभाष ने रूस और जर्मन से अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने के लिए सहायता मांगी। सुभाष ने वर्ष 1943 में जापान का दौरा किया, जहाँ शाही प्रशासन ने उनकी याचना पर मदद के लिए हामी भरी थी। यही वह जगह थी जहाँ पर सुभाष ने भारतीय युद्ध में शामिल होने वाले कैदियों के साथ 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया, जो ब्रिटिश भारतीय सेना के लिए काम करते थे। अक्टूबर 1943 में सुभाष ने एक अस्थायी सरकार का गठन किया, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, असीमित शक्तियों द्वारा स्वीकृत प्रदान की गई थी।

बोस के नेतृत्व में, आईएनए (आजाद हिंद फौज) ने पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों पर हमला किया और कुछ हिस्सों पर कब्जा करने में कामयाब रहे। हालांकि, अंत में आईएनए को, खराब मौसम और जापानी नीतियों के कारण आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया गया था। हालांकि सुभाष चन्द्र बोस, उनमें से एक थे जो आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार नहीं थे। सुभाष चन्द्र बोस वहाँ से किसी तरह भाग निकले और फिर से अपने उस संघर्ष की लड़ाई को दोहराने का उन्होंने प्रयास किया। सुभाष चन्द्र बोस ताइहोकू हवाई अड्डे पर एक विमान से सुरक्षित बचकर भाग निकले लेकिन उनका भागना निरर्थक रहा। ऐसा कहा जाता है कि सुभाष चन्द्र बोस का विमान फारमोसा (जिसे अब ताइवान के रूप में जाना जाता है) में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, उस समय फारमोसा पर जापानियों द्वारा शासन किया जा रहा था।

भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण अवधि में ज्वलंत नेतृत्व की भावना को बनाए रखा, और भी कई अन्य तरीकों से बोस ने अपनी मातृभूमि के लिए स्वतंत्रता संग्राम में अपना विशिष्ट योगदान दिया। आईएनए (आजाद हिंद फौज) द्वारा किया गया हमला, चाहे वह कितने भी कम समय तक रहा हो, एक महत्वपूर्ण कारक बना, जिसने अंततः ब्रिटिश लोगों के कार्यो को रोकने और उन्हें अपने देश में वापस जाने के निर्णय में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था। यानि सुभाष चन्द्र बोस ने भारत की आजादी के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।

सुभाष चन्द्र बोस आर्य समाज के कार्यो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने स्वामी जी को आधुनिक भारत का निर्माता बताया। निःसंदेह नेताजी, भारत की आजादी के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक हैं। सुभाष चन्द्र बोस स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता रह। एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सुभाष चन्द्र बोस ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी अंग्रेजों से लड़ने की अपनी भावना को बरकरार रखा- यहाँ तक कि जब उनकी मौत हुई उस समय वह रूस में स्थानांतरण करने और ब्रिटिश लोगों से मुकाबला करने के लिए नए रास्ते को तलाशने की योजना बना रहे थे और इनकी दृढ़ता और देशभक्ति का उत्साह ऐसा है कि इन्हें किसी अन्य की तुलना में अधिक सम्मानित किया जाना चाहिए। **स्वतंत्रता के इस महान नायक को उनकी जयंती पर आर्य समाज का नमन ।**

90वें स्थापना दिवस पर
आर्य भजन-प्रवचन

आर्य समाज बिरला लाईस कमला नगर द्वारा 29 जनवरी 2020 को आर्यसमाज का 90वां स्थापना दिवस सायं 5:30 से रात्रि 9 बजे तक मनाया जाएगा। इस अवसर पर पं. कुंवरपाल शास्त्री जी ब्रह्मत्व में यज्ञ, आचार्य छविकृष्ण शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्री गौरव आर्य जी के भजन होंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी मुख्य अतिथि होंगे। - ***संजीव बजाज, प्रधान***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• **प्रचार संस्करण (अजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• **विशेष संस्करण (सजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

जन्मदिवस पर विशेष आर्य नेता लाला लाजपत राय जी को नमन

"आर्यसमाज मेरे लिए माता के समान है और वैदिक धर्म मुझे पिता तुल्य प्यारा है।" ये शब्द स्वतंत्रता के उस सिपाही और भारत माता के उस लाल के हैं जिन्हें लोग लाला लाजपत राय जी नाम से जानते हैं। आजादी के महानायकों में लाला लाजपत राय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार कराता है। अपने देश धर्म तथा संस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविधि क्रियाकलाप में साहित्य-लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। एक साधारण से परिवार में लाला जी का जन्म 28 जनवरी1865 को पंजाब के मोगा जिले के दुधिके गाँव में हुआ था। उनके पिता लाला श्री राधा किशन आजाद जी सरकारी स्कूल में उर्दू के शिक्षक व माता देवी गुलाब देवी धार्मिक महिला थीं। लाला राधा किशन जी के विषय में लाला जी स्वयं लिखते हैं की मेरे पिता पर इस्लाम का ऐसा रंग चढ़ा था की उन्होंने रोजे रखना शुरू कर दिया था। सौभाग्य से मुझे आर्यसमाज का साथ मिला जिसके कारण मेरा परिवार मुसलमान बनने से बच गया। लाला जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। धन आदि की अनेक कठिनाइयों के पश्चात् भी उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। 1880 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी व पंजाब यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षाएं पास करने के बाद उन्होंने लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला ले लिया व कानून की पढाई प्रारंभ की! लेकिन घर की माली हालत ठीक न होने के कारण दो वर्ष तक उनकी पढाई बाधित रही। लाहौर में बिताया गया समय लाला जी के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ और यहीं उनके भावी जीवन की रूप-रेखा निर्मित हो गयी! उन्होंने भारत के गौरवमय इतिहास का अध्ययन किया और महान भारतीयों के विषय में पढ़कर उनका हृदय द्रवित हो उठा। यहीं से उनके मन में राष्ट्र प्रेम व राष्ट्र सेवा की भावना का बीजारोपण हो गया। कानून की पढाई के दौरान वह लाला हंसराज जी व पंडित गुरुदत्त जी जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आये। ये तीनों अच्छे मित्र बन गए और 1882 में आर्य समाज के सदस्य बनें। जब 30 अक्टूबर, 1883 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर आर्यसमाज की ओर एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चित हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृति तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान -विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण की स्थापना हुई तो आर्यसमाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी0ए0वी0 कालेज, लाहौर के महान स्तम्भ बने। युवाओं को राष्ट्र भक्ति का सन्देश देने के लिए उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा शिवाजी, स्वामी दयानंद, मेजिनी, गैरीबाल्डी जैसे प्रसिद्ध लोगों की आत्मकथाएं अनुवादित व प्रकाशित कीं! इन्हें पढ़कर अन्य लोगों ने भी स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त की! लाला जी जन सेवा के कार्यों में तो सदैव ही आगे रहे लालाजी के व्यक्तित्व को यदि बहुत कम शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया जाये उपयुक्त शब्द होंगे कि वे देशभक्ति की सजीव प्रतिमा थे। **उनके लिए धर्म, मोक्ष, स्वर्ग और ईश्वर पूजा- सभी का अर्थ था देश सेवा, देशभक्ति और देश से प्यार लाला लाजपत राय जी की जयंती पर आर्य समाज का सादर नमन।**

पुस्तक समीक्षा

भारतीय संस्कृति एवं हिंदुओं की वर्तमान भयावह स्थिति के ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने वाली एक अद्भुत पुस्तक

युगधर्म ... अपराधी कौन?

लेखक: राजऋषि पराशर
संपादक: विनय आर्य
प्रकाशक: वैदिक प्रकाशन
प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
पृष्ठ : 120 मूल्य : 60 रुपये
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

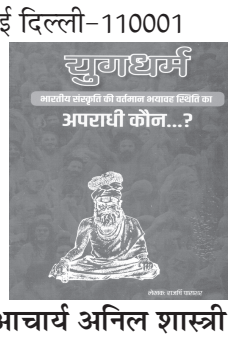

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने तमाम वें रहस्य उजागर किए हैं जिनके कारण आज भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का गौरव लगातार क्षीण होता जा रहा है। हिंदू समाज को जागृत करने वाली इस पुस्तक की भाषा, भाव और शैली अत्यंत सरल और सहज है। इसमें बताया गया है कि आज देश में बढ़ते असंतुलन और अनेकानेक समस्याओं का जनक और अपराधी कौन है? यह पुस्तक समस्त भारतीयों के लिए पठनीय और विचारणीय है। **- समीक्षक : आचार्य अनिल शास्त्री**

शीतकालीन चरित्र निर्माण शिविर

आर्य समाज सुंदर विहार द्वारा 1 जनवरी से 5 जनवरी 2020 तक देश की युवाशक्ति का चरित्र निर्माण करने हेतु विशेष शीतकालीन शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 4 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु के लगभग 85 बच्चों ने भाग लेकर अपने जीवन को सुदिशा प्रदान की। इस शिविर के आयोजन में महिला आर्य समाज सुंदर विहार द्वारा भी विशेष सहयोग प्रदान किया गया। प्रतिदिन यज्ञ, भजन का कार्यक्रम हुआ। ऐरोबिक व्यायाम सिखाया गया, पर्यावरण शुद्धि और यातायात के नियम सिखाए गए, दांतों की देखभाल, राष्ट्रीय एकता, समय का सदुपयोग, देशभक्ति, गुरुड़म और अंधविश्वास से बच्चों को बचने की सलाह और ईश्वर की व्यवस्था पर विश्वास करना सिखाया गया। इन सब विषयों पर मौखिक एवं लिखित प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। बच्चों को वैदिक प्रश्नावली, मानसिक संघर्ष आदि जानकारियां भी दी गई। इन सभी बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए पुरस्कार भी बांटे गए। इस शिविर में जलपान आदि की संपूर्ण व्यवस्था उत्तम तरीके से चलाई गई।

- अमरनाथ बत्तरा, मंत्री

आवश्यक सूचना
शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण पुस्तक के संदर्भ में निवेदन

समस्त आर्यसमाजों के मान्य अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं और आर्यजनों से निवेदन है कि पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद जी द्वारा लिखित पुस्तक शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण की प्रति अगर किसी महानुभाव के पास हो, तो कृपया उसकी फोटो प्रति अथवा मूल प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भिजवाने की कृपा करें। यह पुस्तक कहीं मिल नहीं रही है और सभा इसका पुन: पकाशन कराना चाहती है। पुस्तक की प्रति भिजवाने के लिए यदि कोई शुल्क देय हो तो कृपया सूचित करें, सभा की ओर से भुगतान कर दिया जाएगा। कृपया पुस्तक/ प्रति **'महामन्त्री'** के नाम निम्न पते पर भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

ऋग्वेद प्रयाण यज्ञ एवं वैदिक ज्ञान परीक्षा संपन्न

श्री अमृत मुनि जी वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्धार द्वारा 1 से 15 जनवरी 2020 अशोक नगर-सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश में एक पारिवारिक वृहद ऋग्वेद प्रयाण यज्ञ एवं वैदिक ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से जोड़ने के लिए मौखिक परीक्षा ली गई। इस परीक्षा के 4 विषय निश्चित थे, वेद, यज्ञ, ईश्वर और मिश्रित विषयों पर आचार्य सुरेश वैदिक प्रवक्ता ने प्रश्न पूछे और अमृत मुनि जी वानप्रस्थ आश्रम हरिद्धार ने परिणाम उद्घोषित किए। जिसमें श्रीमती शैलजा त्रिपाठी दिल्ली द्वारा विजेता आर्य बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रथम पुरस्कार मुस्कान अग्रहरी एवं अंकिता तिवारी रहे, द्वितीय पुरस्कार अनमोल त्रिपाठी और अंकिता श्रीवास्तव ने प्राप्त किया, तृतीय पुरस्कार श्रद्धा अग्रहरी ने प्राप्त किया। सांत्वना पुरस्कार महेश त्रिवदी, सृष्टि उपाध्याय, आराध्य शुक्ल, याजवलक्य, अद्विति शुक्ला, सांभवी को दिया गया। यह वैदिक ज्ञान परीक्षा बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी वैदिक धर्म से जोड़ने वाली सिद्ध हुई। *- सुरेश जोशी, आचार्य*

आर्यजगत के आजीवन ब्रह्मचारीगण अपना विवरण भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज के उत्थान और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित उन सभी आजीवन ब्रह्मचारियों, जो आजीवन अविवाहित रहकर महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़कर गति प्रदान करने लिए संकल्पित हैं। सभा ऐसे सभी ब्रह्मचारियों के कल्याणार्थ विशेष योजना तैयार करना चाहती है। अत: आजीवन ब्रह्मचर्यव्रती युवक-युवतियां अपना नाम, फोन नं., पता, योग्यता और अनुभव लिखकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर रजिस्र्ड डाक से भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल अथवा 9650183339 पर व्हाट्सएप्प करें। *- महामन्त्री*

शोक समाचार

श्री रामगोपाल आर्य को पितृशोक

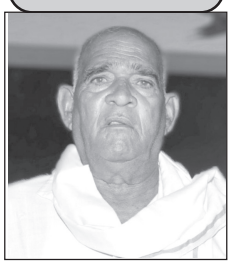

आर्यसमाज हिम्मतपुर काकामई, एटा के प्रधान श्री रामगोपाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री नौजरसिंह जी का दिनांक 4 जनवरी को लगभग 70 व/र्ा की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ उनके पैत्रक गांव में ही किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रांजलि सभा 13 जनवरी को सम्पन्न हुई।

चौधरी रघुनाथ सिंह यादव का निधन

आर्यसमाज नजफगढ़ के कर्मठ सदस्य चौधरी रघुनाथ सिंह यादव जी का 20 जनवरी, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति के साथ खेड़ा स्थित शमशान घाट पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23-24 जनवरी, 2020
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 जनवरी, 2020

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री प्रबोधचन्द्र सूद जी पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 27 दिसम्बर, 2019 को आर्यसमाज हमीरपुर में सम्पन्न हुआ, जिसमें हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों से पधारे 75 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। निर्वाचन अधिकारी श्री योग प्रकाश नन्दा जी ने चुनाव प्रक्रिया को सम्पन्न कराया। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में **श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी को सर्वसम्मति से तीसरी बार** पुनः प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **वरिष्ठ उप प्रधान** श्री योग प्रकाश नन्दा, **उप प्रधान** - सर्वश्री विमादित्य महाजन, राजेश रावल, **महामन्त्री** - श्री विपिन महाजन, **उपमन्त्री** - सर्वश्री राकेश कायस्थ, संगठन सचिव - राजीव आर्य जीएवं **श्री सुधीर सूद जी को कोषाध्यक्ष** के रूप में निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

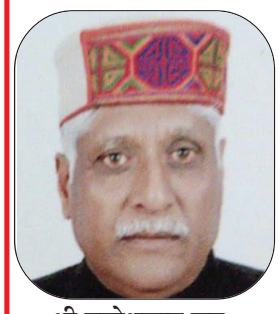
श्री प्रबोधचन्द्र सूद
प्रधान

श्री विपिन महाजन
महामन्त्री

श्री सुधीर सूद
कोषाध्यक्ष

प्रतिष्ठा में,

निवेदक : आर्यसमाज तुरंगा, महर्षि सान्दिपनी राष्टीय वेद विदया प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र) मो.9556228159 9425252510

पृष्ठ 4 का शेष

कन्या महाविद्यालय बनारस की कन्याएं, डॉ. गायत्रीजी (दिल्ली), आचार्य दयासागर जी, भजनोपदेशक मोहित आर्य, आचार्य चन्द्रमणि जी, श्री पं. रामलाल शास्त्री, श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, विशिष्ट अतिथि - सुश्री ऊषाजी ठाकुर (विधायिका, महू) आदि उपस्थित थे।

प्रान्त के सभी जिलों से तो व्यक्ति आए ही दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, झारखण्ड, हरियाणा से भी अनेक श्रद्धालु इस आयोजन में पधारे थे। सबके ठहरने के लिए नगर की सभी धर्मशाला व कक्ष आरक्षित कर लिए गए थे।

विशेष सहयोग आर्य समाज, इन्दौर, आर्य समाज, राऊ का रहा। कार्यक्रम में सर्वश्री आर्य राधेश्याम बियाणी, श्रीधर गोस्वामी, आर्य रामलाल प्रजापति, आर्य अश्विनी शर्मा व स्वागताध्यक्ष कैलाश अग्रवाल, रवि आर्य, रमेश अग्रवाल, राजेश नेनावा, ओमजी आर्य, डॉ. चन्द्रप्रकाश निगम, सुश्री निधि शर्मा, सुश्री सुनीति शर्मा, मीना वर्मा, श्रीमती मधु जोशी, द्रोणाचार्य दुबे, भागीरथ प्रजापति, कमल धानुक, मोहन आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य, प्रकाश चौधरी, आशीष आर्य आदि का सहयोग प्रतिदिन मिलता रहा।

- आर्य राधेश्यामजी बियाणी
अध्यक्ष, आर्य शिक्षण संस्थान, महू

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह